पराग
ऑनर लिस्ट
2020

बच्चों और किशोर पाठकों के लिए
हिंदी और अंग्रेजी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तकों
की परिष्कृत संग्रह सूची

पराग ऑनर लिस्ट 2020

टाटा ट्रस्ट्स के पराग इनिशिएटिव द्वारा बच्चों और किशोर पाठकों के लिए हिंदी और अंग्रेजी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तकों की परिष्कृत संग्रह सूची है 'पराग ऑनर लिस्ट'। यह प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है जिसमे साल भर में प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की सूची, प्रत्येक शीर्षक के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाती है। यह सूची बाल साहित्य के विशेषज्ञों द्वारा कई स्तरों की स्क्रीनिंग एवं समीक्षाओं के पश्चात तैयार की गई है। इसके प्रकाशन का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य की एक व्यापक उत्कृष्ट सूची को लाइब्रेरियन, शिक्षकों, अभिभावक और बच्चों तक पहुँचाना है। जो इन्हें पढ़ें और दूसरों को सुझाएँ भी।

इस वर्ष की सूची के लिए तय चयन मानदंडों के अनुसार हमें 26 भारतीय प्रकाशकों से कथा, कथेतर एवं कविता विधाओं में पुस्तकें प्राप्त हुईं। ये मूल लेखन की पुस्तकें विगत अक्टूबर 2018 से लेकर सितंबर 2019 के बीच विभिन्न श्रेणियों जैसे चित्र-पुस्तक, नव एवं किशोर पाठक में प्रकाशित हुई हैं।

हमें उम्मीद है कि यह सूची वृहत पाठक वर्ग को सर्वश्रेष्ठ भारतीय बाल साहित्य तक की पहुँच के लिए समर्थ करेगी।

कथा

चित्र पुस्तक

कैसा-कैसा खाना

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2019 में प्रकाशित

लेखक प्रभात
चित्रांकन एलेन शॉ

बच्चों को शब्दों को उलट-पुलट कर देखना अच्छा लगता है। यह किताब पढ़ना सीख रहे शुरुआती पाठकों को कुछ ऐसा ही आनंद देगी। एक शब्द 'खाना' को लेकर पूरी किताब में चुहल की गई है। किन-किन शब्दों के साथ खाना शब्द जुड़ता है और कैसे-कैसे संज्ञाओं और क्रियाओं को रचता है इसे लेखक और चित्रकार ने आनंद लेकर दिखाया है। यह सही अर्थों में एक चित्र-पुस्तक है। भाषा और छवियों की साझेदारी इस किताब में दिखती है। यह इस वर्ष की एक अच्छी, आनंददायक किताब है।

छुटकी और चीरो

प्रकाशक: एकलव्य
2019 में प्रकाशित

लेखक मंजरी सिंह
चित्रांकन प्रशांत सोनी

छोटी सी,प्यारी कहानी जो दो अलग अलग डरों और उनके खत्म होने की कहानी है। बेहद कोमल भाव को केंद्र में रखकर रची गयी यह चित्र-कथा बड़े आशय की गाथा बन जाती है --निर्भयता की गाथा। चित्र कथा को प्रस्तुत भी करते हैं और उनके पूरक भी हैं। यहाँ शब्द और चित्र की जुगलबंदी है।

तालाब के किनारे

प्रकाशक: मुस्कान
2018 में प्रकाशित

लेखक सोनिया अगरिया
चित्रांकन सौम्य ओबेरॉय

जंगल,पेड़ पौधों और जीवों तथा तालाब के माध्यम से पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति एवं एक दूसरे के सुख दुख में साथ होने की भावना को जाग्रत करने वाली संक्षिप्त किंतु मार्मिक कथा।

यहाँ लोककथाओं का भी तत्व है। जंगल की रहस्य को सरल शब्दों में व्यक्त किया गया है। स्याह-सफेद चित्र वातावरण को साकार करते हैं।
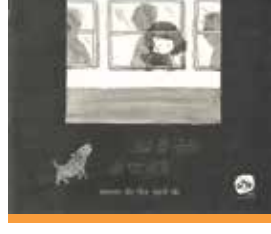
जब मैं मोती को घर लाई

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक शब्दरहित चित्र पुस्तक
चित्रांकन प्रोईती रॉय

हर लिहाज़ से उत्कृष्ट किताब। एक बच्ची एक पिल्ले से इतना जुड़ाव महसूस करने लगती है कि वह हर समय उसी के बारे में सोचती है और उसे घर लाना चाहती है। माँ शुरू शुरू में बहुत संवेदनशील नहीं है, लेकिन धीरे-धीरे मोह में पड़ी बच्ची की मनोदशा समझ उसे घर ले आने को तैयार है। अंतिम पन्ने पर शब्दों का अचानक चले आना एक नया और सुखद प्रयोग है, जैसे अंतर्मन में चल रहे भाव अचानक शब्दों से छुए गए हों। चित्रों में बच्चों के चित्रों की सी सहजता है जो कलात्मक युक्ति के रूप में सामने आती है।

कविता

चित्र पुस्तक

चींटी चढ़ी पहाड़

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2019 में प्रकाशित

लेखक कवि समूह
चित्रांकन प्रोईती रॉय

इस संकलन से पता चलता है कि सस्ती छपी किताबें भी कितनी सुरुचिपूर्ण हो सकती हैं। प्रभात और सुशील की कविताएं बहुत अच्छी हैं। अच्छी किताब का फोर कलर में होना कतई ज़रूरी नहीं। प्रोइती राय के चित्रों में बच्चों के चित्रों की सी सहजता है।

ठाँव-ठाँव घूमा

प्रकाशक: एकलव्य
2018 में प्रकाशित

लेखक श्याम सुशील
चित्रांकन निलेश गहलोत

कविता लयात्मक और सुमधुर है। सुमधुर ध्वनियों और आनुप्रासिक प्रयोगों के कारण पढ़ना सीख रहे शुरुआती पाठक इस किताब की ओर आकर्षित होंगे। 'अकॉर्डियन फोल्ड' के कारण इस किताब को पलटने में भी एक खेल है।

अर्थ के स्तर पर भी यह एक अच्छी कविता है। भाव के स्तर पर कविता में स्वतंत्रता और खुलेपन का भाव है। अपने अनूठे डिज़ाइन, सांगीतिक भाषिक प्रयोगों और खुलेपन के भाव के कारण यह इस वर्ष प्रकाशित हुई किताबों में एक अच्छी किताब है।

कथा

नव पाठक

चश्मा नया है

प्रकाशक: एकलव्य
2018 में प्रकाशित

लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ
चित्रांकन शुभम लखेरा

यह बच्चों द्वारा लिखी गयी कहानियों का संकलन। यह एक असाधारण संग्रह है। इस संग्रह को पढ़कर लगता है कि बच्चों के लेखन को संपादित करके प्रकाशित करना बुरा विचार नहीं है। 'भाई की बकबक'; 'नेकलेस'; 'दुआ'; 'पुत्री का ख़त पिता के नाम'; 'खिड़की, हवा, मछली और मैं' अगर डायरी लेखन है तो उतना ही कहानी लेखन भी है। लगता है बच्चे खुद ही वह साहित्य रच लेते हैं जिसकी उन्हें भावनात्मक या बौद्धिक ज़रूरत महसूस होती है।

टिटहरी का बच्चा

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ
चित्रांकन भार्गव कुलकर्णी

यह एक अनूठी कथा-पुस्तक है जिसे स्वयं बच्चों ने अपनी ज़िन्दगी की बातों, घटनाओं और लोगों से बनाया है। लेकिन यह हाशिए का जीवन है। यहाँ धान की निंदाई है, जंगल में अचार बीनने की कहानी है, टिटहरी का बच्चा है और कबूतर का चौतरा जैसी मार्मिक कथा है। सब सच हैं और सब को अपनी बोली में बच्चों ने लिखा है। ऐसी रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह हर पढ़ने वालों को दूर दराज़ की जिन्दगी और लोगों तक ले जाती है जिससे हमारा हृदय और मन बड़ा होता है।

बकरी की साईकिल

प्रकाशक: एकलव्य
2018 में प्रकाशित
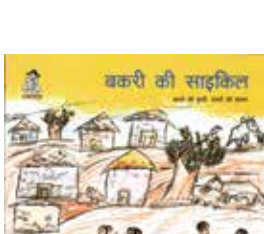
लेखक बच्चों की लिखी कहानियाँ
चित्रांकन बच्चों के चित्र

यह भी एक अनूठी किताब है। इसे खुद बच्चों ने तैयार किया है। बातें भी उनकी हैं और साथ के चित्रांकन भी उनके या उनके साथियों के। ये कहानियाँ इस अर्थ में हैं कि इनमें कुछ न कुछ घटता है और खुद उनके साथ या उनके साथ के लोगों के साथ घटता है। ये अपने जीवन की सच्ची कहानियाँ हैं जिनमें कई तरह के खट्टे मीठे अनुभव हैं, फ़सल कटाई से लेकर स्टेशन पर खोने और अपनी भैंस की कहानी भी। ये पढ़ने वाले के भीतर प्रेम ,दुलार और सच्चाई के भाव विकसित करती हैं।

कथेतर

दो बहनों की मसाई मारा यात्रा

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक कमला भसीन
चित्रांकन बीना काक

नए अनुभवों से गुजरने के लिए और नई-नई खोजों के लिए व्यक्ति का स्वतंत्र होना जरूरी है। यात्रा की बेहतर कहानियाँ अप्रत्यक्ष रूप से 'स्वतंत्रता' को एक मूल्य के तौर पर प्रतिष्ठित करती हैं। इस दृष्टि से यह किताब बहुत महत्त्वपूर्ण है। आमतौर पर औरतें जब यात्रा पर निकलती हैं तो परिवार के साथ निकलती हैं जिसमें पुरुष होते हैं और पुरुष ही यात्रा का नेतृत्व करते हैं। इस किताब में जिन यात्रियों का विवरण है वे बिना किसी पुरुष को साथ लिए इस यात्रा पर निकल जाती हैं। इस तरह यह हौसला देने वाली और इस वर्ष की महत्त्वपूर्ण किताब है।

कविता

नव पाठक

चार चटोरे

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2019 में प्रकाशित

कवि वीरेन्द्र दुबे
चित्रांकन नबरीना सिंह

यह छोटी-छोटी कविताओं का संग्रह है जिन्हें एक ही कवि ने लिखा है। यह बहुत प्यारी कविताओं का संग्रह है जो आस-पास के विषयों को आधार बनाकर रची गयी हैं। छंदोबद्ध हैं और लय इतनी सरल कि तुरत कंठस्थ होजाएँ। ऐसी निर्दोष कविताएँ कम देखने को मिलती हैं। चित्रांकन भी प्रभावकारी है और कविता की संगत करता है। इन कविताओं की एक ख़ूबी इनकी भाषा का कौतुक भी है जो कल्पना को नयी उड़ान देता है।

हाऊ-हाऊ हप्प

प्रकाशक: एकलव्य
2018 में प्रकाशित

कवि कवि समूह
चित्रांकन कनक शशि

यह हिन्दी की कालजयी बाल कविताओं का अनूठा संकलन है जहाँ वे कविताएँ भी हैं जिन्हें आज के बच्चों के दादा के दादाओं ने अपने बचपन में पढ़ा था और वैसी कविताएँ भी हैं जो पहली बार किसी संकलन में प्रकाशित हो रही हैं किंतु जिन सब को आज से सौ साल बाद भी इतने ही प्यार से पढ़ा और सुना जाएगा। यहाँ भाषा और शब्दों के खेल हैं, तुकों की अप्रत्याशित बंदिशें हैं और संगीत का धमाल है। आस पास का दैनन्दिन जीवन है तो आकाश पाताल की गप्पें भी। हर बच्चे,और हर सयाने,के हाथ में यह किताब होनी ही चाहिए।

कथा

किशोर पाठक

घुड़सवार

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक उदयन वाजपेयी
चित्रांकन तपोशी घोषाल

इस किताब में तीन कहानियाँ हैं और पांच कथेतर गद्य हैं। ये गद्य मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियों से जुड़ी गतिविधियों पर केंद्रित हैं - देखना, सुनना, स्पर्श, गन्ध और स्वाद। देखना, छूना आदि महज जैविक गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि मानवीय गतिविधियाँ भी हैं। इन जैविक और मानवीय गतिविधियों पर इत्मीनान से रस लेकर विचार किया गया है। किताब में शामिल तीनों कहानियों में पारम्परिक शैली की कथाओं जैसा कथारस है, लेकिन ये कहानियाँ जीवन की कुछ गहरे अस्तित्वगत उलझनों को भी सामने लाती हैं।

चमनलाल के पायजामे

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2019 में प्रकाशित

लेखक अनिल सिंह
चित्रांकन तपोशी घोषाल

इस संग्रह की एक यादगार कहानी है बंदरों की जल-समाधि जो मनुष्य की विकास की दौड़ में मारे गए हैं। और उनकी मृत्यु को एक बच्चे की दृष्टि से पाठक को महसूस करवाना लेखक से परिपक्वता की अपेक्षा करता है। इस किताब में ऐसा लगता है कि हर कहानी के केंद्र में जैसे लेखक का अपना ही बाल-रूपी किरदार हो। कस्बाती और ग्रामीण जीवन के जीवंत विवरण एकदम आत्मकथात्मक गल्प की विधा में धीरे-धीरे खुलते हैं और पाठक तो एक तरह का काव्य-सुख प्रदान करते हैं।

पेपर चोर

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2019 में प्रकाशित

लेखक वरुण ग्रोवर
चित्रांकन चन्द्र कुलकर्णी

इन कहानियों में वर्णित चरित्र प्रायः किन्ही विनाशकारी स्थितियों से गुजरते हुए दिखते हैं। ये कहानियाँ जितना बाहरी उथल-पुथल को व्यक्त करती हैं, उतना ही चरित्रों की भीतरी मनोदशाओं, स्वप्नों, आकांक्षाओं और आशंकाओं को भी व्यक्त करती हैं। शिल्प के स्तर पर अकसर ये कहानियाँ यथार्थवादी शिल्प में शुरू होती हैं, लेकिन अकसर यथार्थवादी शिल्प का अतिक्रमण कर फंतासी में चली जाती हैं। प्रत्येक कहानी के कुछ महत्त्वपूर्ण दृश्यात्मक पहलुओं को चित्रांकन के माध्यम से उजागर किया गया है।

रानू मैं क्या जानूँ?

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक असगर वजाहत
चित्रांकन अतनु रॉय

यह एक भिन्न कोटि की किताब है जहाँ कथा-संवाद की शैली में कोई अप्रचलित बात कही जाती है और वाद-विवाद के लिए प्रेरित किया जाता है। मासूम से लगने वाले सवाल पूरी व्यवस्था को ही कठघरे में खड़ा करते हैं। पर ये बहुत मनोरंजक भी हैं, कई बार चुटकुलों जैसे। इन्हें पढ़ते हुए उसे बच्चे की याद आ सकती है जिसने पहली बार कहा था कि राजा नंगा है। दिये गये रेखांकन भी कथानक को सजीव बनाते हैं जो लगातार स्याह कूँची से बने हैं।

किशोर पाठक

रेड सन के एलियन

प्रकाशक: चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट
2019 में प्रकाशित

लेखक संजीव जायसवाल 'संजय'

इस किताब की सबसे ख़ास बात यह है कि पृथ्वी पर एलियन द्वारा हमले का रहस्य का पर्दाफाश करने वाले व्यस्क वैज्ञानिक नहीं लेकिन युवा विद्यार्थी हैं। भीतर के चित्र कुछ अच्छे हैं, कुछ छपाई में बिगड़ गए हैं। लेकिन इसपर यूँ भी ध्यान नहीं जाता क्योंकि आख्यान इतना दमदार है। युवा विद्यार्थियों के प्रति कुछ उदारतावादी भाव भी दीख पड़ते हैं, लेकिन चूंकि रहस्य सुलझाने में युवा लोग ही सफल होते हैं, इसलिए यह लेखक की सोची-समझी आख्यानात्मक युक्ति भी हो सकती है कि जिन्हें केवल महान वैज्ञानिक के सहायकों के रूप से आमंत्रित किया जाता, उन्हें ही एलियन का भंडाफोड़ करने करने का श्रेय जाता है।

सप्पू के दोस्त

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक स्वयं प्रकाश
चित्रांकन एलेन शॉ

यह कहानियाँ किशोर-दृष्टि से बुनी गयी हैं जहाँ साधारण घटना भी अर्थवान बन जाती है, जैसे ट्रेन की यात्रा या बग़ीचे में अमरूदों की चोरी जो जीवन के बड़े मूल्यों की ओर संकेत करती हैं। इनकी विशेषता यह है कि यहाँ कथानक,पात्र और भाषा सब आस पास के जीवन के हैं। और हर कहानी हमें बेहतर इन्सान बनाती है, हाँलाकि ये कहीं भी सायास उपदेशात्मक नहीं हैं। कहानियाँ मज़ेदार भी हैं और अंत तक ध्यान बाँधे रखती हैं। चित्र स्थितियों को उभारते हैं और रंग अलग से ध्यान नहीं खींचते।

बिक्सू

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
2018 में प्रकाशित

लेखक वरुण ग्रोवर
चित्रांकन राजकुमारी

'बिक्सू' आवासीय विद्यालय में पढ़ने वाले झारखंड के एक ग्रामीण बालक की कहानी है। बिक्सू पढ़ते हुए पाठक संवेदनात्मक और बौद्धिक स्तर पर समृद्ध होंगे ऐसा कई कारणों से लगता है। बिक्सू की कहानी में एक तरफ अगर स्थानीय रंग गहरे हैं तो दूसरी तरफ यह कथा सार्वभौमिक कथाभूमि पर भी एक लकीर खींचती चलती है। यह कथा जितना बाहर चलती है उतना ही भीतर भी। मुख्य पात्र की स्मृतियों और मानसिक द्वंद्वों को भाषा, चित्र और ले ऑउट डिजाइन सभी स्तरों पर अभिव्यक्त करने की कोशिश की गई है।

बचपन की बातें

प्रकाशक: एकलव्य
2018 में प्रकाशित

लेखक संजीव ठाकुर
चित्रांकन रिया पटेल

जानी मानी हस्तियों के बचपन के बारे में इस तरह से लिखी गयी है जैसे आत्मकथा लिखी जाती है। शैली एकदम सहज, बोधगम्य, और रोचक। संगीत, विज्ञान, सिनेमा, साहित्य, पक्षी-विज्ञान आदि क्षेत्रों से बड़ी हस्तियों के बचपन चुने गए हैं। बड़ों के बचपन को ज़रा भी रूमानियत से नहीं देखा गया है। लगभग हर बचपन में ऐसी कई अप्रिय बातें भी हैं जो आम तौर पर व्यक्ति छिपाने की कोशिश करता है। बड़े होने की प्रक्रिया में इस किताब का किसी युवा पाठक को मिल जाना एक सुखद और प्रेरणादायक अनुभव सिद्ध होगा।

जूरी कहते हैं...

अरुण कमल

अरुण कमल हिन्दी कवि एवं निबंधकार हैं। उनकी कविता के छह संग्रह एवं तीन चयन तथा साहित्य संबंधी निबंधों की तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनकी बच्चों के लिए दो किताबें छप रही हैं, जिनका नाम है हवामिठाई एवं एक चोर की चौदह रातें। अरुण कमल पटना विश्वविद्यालय में अँग्रेजी के शिक्षक रहे हैं। उन्हें कविता के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (१९९८), भारतीय भाषा परिषद का समग्र कृतित्व सम्मान(१९१४) समेत अनेक पुरस्कार मिली है।

सबसे पहले तो मेरा ध्यान भाषा पर जाता है। भाषा सरल हो, पर मुहावरेदार और चित्रात्मक। शब्दों का खेल और ध्वनियों की नयी लयकारी हो, खासकर कविताओं के मामले में। मैं यह भी देखता हूँ कि इस रचना में नया क्या है। अगर कुछ नया है तो पढ़ने सुनने वाले को भी नयी दृष्टि मिलेगी। अगर यह कहानी या उपन्यास है तो कथानक को स्पष्ट और घटनाओं को परस्पर संबद्ध होना चाहिए और पात्र भी सुगठित हों। रचना यथार्थ पर आधारित होकर भी कल्पना लोक में विचरण करे और एक कलाईडोस्कोप की तरह जीवन प्रसंगों से नए और तरह-तरह के बिम्ब बनाये। लेकिन कभी भी अंत निराशा या पराजय पर न हो। नेकी और अच्छाई की जीत का संदेश या भाव होना ही चाहिए। पर ऐसा न लगे कि बलात् उपदेश पिलाया जा रहा है। मुझे वो किताब या रचना सबसे अच्छी लगती है जो मैं एक साथ देखूँ, सुनूँ और पढ़ूँ।

मनोज कुमार

मनोज पिछले दो दशकों से हिन्दी साहित्य और स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होने नब्बे के दशक में दिल्ली विश्विद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. और एम. फिल. की डिग्री हासिल की और कुछ समय तक अलग-अलग विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्यापन किया। सम्प्रति वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में 'हिन्दी भाषा-शिक्षण' और 'शिक्षा के समाजशास्त्र' के अध्यापन से जुडे हुए हैं। 'बाल साहित्य' के क्षेत्र में मनोज की विशेष रुचि है क्योंकि यह शैक्षिक गतिविधि का एक ऐसा क्षेत्र हैं जिसमें शिक्षा के साथ साहित्यिक और सौंदर्यशास्त्रीय विमर्श की गुंज़ाइश है।

प्राथमिक कक्षा में जब विद्यार्थी भाषा के विविध प्रयोगों से गुजरते हुए उन्हें सीख रहा होता है तब उन्हें साहित्यिक रचनाओं का आस्वाद मिले यह जरूरी है| बाल साहित्य रचनात्मक लेखन की एक ऐसी पहलकदमी है जो डगमगाते क़दमों से भाषा में टहलना-बोलना शुरू कर रहे पाठकों की ऊँगली थामकर उन्हें नई रचनात्मक दुनिया में ले जाने को तत्पर है| जाहिर है बाल साहित्य ऐसा तभी कर पाएगा जब वह अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से आए बच्चों के जीवनानुभवों से खुद को समृद्ध करेगा| पिछले कुछ दशकों में कम से कम हिन्दी के कुछ लेखकों का ध्यान अलग-अलग सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश में बचपन के अलग-अलग तरह के अनुभवों गुजर रहे बच्चों की ओर गया है| हिन्दी में बच्चों के लिए ऐसा साहित्य भी लिखा जा रहा है जिनमें बुनियादी अस्तित्वगत प्रश्नों और नैतिक उलझनों से जूझने का रचनात्मक हौसला दिखता है|

जूरी कहते हैं...

तेजी ग्रोवर

तेजी ग्रोवर कवि, कथाकार, चित्रकार, अनुवादक हैं। बाल-साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए उन्होंने कई बाल-पुस्तकें भी तैयार की हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। इनकी कविताएँ देश-विदेश की तेरह भाषाओँ में, और नीला शीर्षक से एक उपन्यास और कई कहानियाँ पोलिश और अंग्रेजी में अनूदित हैं । अभी तक चित्रों की सात एकल और तीन समूह प्रदर्शनियां देश-विदेश में हो चुकी हैं। 2019 में उन्हें वाणी फाउंडेशन विशिष्ट अनुवादक सम्मान, और स्वीडन के राजा और रानी द्वारा “रॉयल आर्डर ऑफ़ पोलर स्टार (Knight)” की उपाधि प्रदान की गयी ।

बच्चों का साहित्य मुझे उम्र की सीमाओं से ऊपर उठाकर मेरे अंदर के बच्चे और वयस्क को सहजता से जोड़े रखता है । अच्छे बाल साहित्य में वयस्कता और बालपन को एक ऐसे नैरन्तर्य में पिरो देने ने की क्षमता होती है जो हर उम्र के मनुष्य के लिए हस्ती के सुख-दुःख से रूबरू होने में सहायक सिद्ध होती है। मुझे यकीन है कि बच्चों के लिए एक अच्छी किताब, बड़ों के लिए भी एक और भी बेहतर किताब सिद्ध होती है क्योंकि वे कभी खुद बच्चे रहे हैं और वे इस बात की गहराई से वाकिफ हैं कि अपने बढ़ते वर्षों में उन्होंने किन अभावों को शिद्दत से महसूस किया है। मेरे अनुसार बच्चों की किताबों में आनंद, आश्चर्य, करुणा और अंतर्दृष्टि की साझा भावना का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज़िन्दगी में आने वाले किसी भी दुःख या निराशा को बिना उम्मीद खोए एक गहन स्वीकर भाव से ग्रहण कर पाने की क्षमता भी अच्छे बाल साहित्य के पाठ से मुझे बखूबी मिल जाती है।

टाटा ट्रस्ट्स का पराग इनिशिएटिव 'पढ़ने की बदलावकारी ताकत' के विश्वास से संचालित है और जो यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहा है कि पूरे भारत भर के बच्चे विशेष रूप से विविध भाषाओं में पढ़ने का रस व आनंद ले सकें| बाल साहित्य के सोर्सिंग, प्रकाशन व प्रसार के लिए पराग के तीन मॉडल्स ने बच्चों और युवाओं के बीच आनंदपूर्ण पठन को प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों के साहित्य, पठन और साक्षरता के पारिस्थितिकी तंत्र को उत्प्रेरित किया है|

Visit us:
www.paragreads.in

Contact us:
paragreads@tatatrusts.org

Follow us:

 @ParaganinitiativeofTataTrusts

 @ParagReads